रबी प्याज की उन्नत खेती

भूमि का चुनाव:प्याज को विभिन्न प्रकार की मृदाओं म उगाया जा सकता है, लेकिन अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए दोमट या बुलई दोमट मिटटी, जिसम जीवंाश्म पदाथ की प्रचुर मात्रा व जल निकास की उत्तम व्यवस्था हो साथ ही मृदा का पी.एच.मान सामान्य (6.5-7.5) हो सर्वोत्तम मानी जाती है।

खेत की तैयारी:खेत म पहली जुताई मिटटी पलटने वाले हल से करने बाद 2-3 जुताई देशी हल अथवा हैरो द्वारा कर जिससे की मिट्टी के नीचे कठोर परत टूट जाएं तथा मिट्टी भुरभुरी बन जाए। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य लगाय।

उन्नतशील किस्म:एग्रीफाउंड लाईट रेड, एग्रीफाउंड व्हाईट, पूसा माधवी, एग्रीफाउंड डार्क रेड, एन. 53, पूसा रेड, अका प्रगति,

खाद उवरक : रबी प्याज म खाद एवं उवरक की मात्रा जलवायु व मिट्टी के प्रकार पर निभर करती है। अच्छी फसल लेने के लिये 20-25 टन अच्छी सड़ी गोबर खाद प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की अंतिम तैयारी के समय मिला दं। इसके अलावा 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस व 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से डाल। नत्रजन की आधी मात्रा और फास्फोरस व पोटाश की संपूण मात्रा रोपाई के पहले खेत म मिला दं। नत्रजन की शेष मात्रा को 2 बरबर भागों म बांटकर रोपाई के 30 दिन तथा 45 दिन बाद छिड़क कर दं। इसके अतिरिक्त 50 किलोग्राम सल्फर व 5 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से रोपाई के पूव डालना भी उपयुक्त रहेगा।

- **बीज की मात्रा**: 8-10 किलो/हेक्टेयर **बीज बोने का समय:** सितम्बर- अक्टूबर **पौध रोपण का समय:** दिसम्बर - जनवरी

नसरी म पौध तैयार करना: रबी प्याज की उन्नत किस्म के बीज को 3 मीटर लम्बी, 1 मीटर चौड़ी व 20-25 से.मी. ऊंची उठी हुई क्यारियां बनाकर बोनी कर । प्रत्येक क्यारी म 40 ग्राम डी.ए.पी., 25 ग्राम यूरिया, 30 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश व 10-15 ग्राम फ्यूराडान डालकर अच्छी तरह मिट्टी म मिला दं। सितम्बर अक्टूबर माह म क्यारियों को तैयार कर क्लोरोपाईरीफॉस (2 मिली./ लीटर पानी) काबन्डाजिम (1 ग्राम/लीटर पानी) को घोलकर क्यारी की मिट्टी को तर कर 250 गेज मोटी सफेद पॉलिथिन बिछाकर 25-30 दिनों तक मिटटी का उपचार कर लबीजों को क्यारियों म बोने से पूव थायरम या कार्बासिन/बाविस्टीन नामक फफूंदनाशक दवा से 2-3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर। उपचारित बीजों को 5-10 सेमी. के अंतर पर बनाई गई कतारों 1सेमी. की गहराई पर बोएं। अंकुरण के पश्चात पौध को जडग़लन बीमारी से बचाने के लिए 2 ग्राम थायरम 1 ग्राम बाविस्टीन दवा को 1 लीटर पानी म घोलकर छिड़काव कर। बुआई के लगभग 7-8 सप्ताह बाद पौध खेत म रोपण के लिए तैयार हो जाती है।

पौध रोपण: खेत म पौध रोपाई से पूव पौध की जड़ों को बाविस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के धोल म 15-20 मिनट डुबोकर रोपाई कर ताकि फसल को बैगनी धब्बा रोग से बचाया जा सके। रोपाई करते समय कतारों से कतारों के बीच की दूरी 15 सेमी. तथा पौध से पौध की दूरी 10 सेमी. रख।

सिंचाई: पौध रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई अवश्यकर तथा उसके 2-3 दिन बाद फिर हल्की सिंचाई कर जिससे की मिट्टी नम बनी रहे व पौध अच्छी तरह से जम जाय। प्याज की फसल म 10-12 सिंचाई पयाप्त होती है। खुदाई से 15 दिन पहले सिंचाई बन्द कर देना चाहिए। टपक विधि के द्वारा सिंचाई करने से उपज मे 15-20 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 40-50 प्रतिशत पानी की बचत होती है।

निंदाई-गुड़ाई:फसल को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए समय-समय पर निराई-गुड़ाई करके खरपतवार को निकालते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त खरपतवारनाशी जैसे स्टाम्प 30 ई.सी. का 3 लीटर/ हेक्टेयर की दर से रोपाई के 2-3 दिन बाद छिडकाव कर। खड़ी फसल म यदि सकरी पत्ती वाले नींदा अधिक हो तो क्वीजालोफॉप ईथाइल 5 ईसी के 400 मि.ली./हेक्टर के मान से कर।

फसल सुरक्षा

1. थ्रिप्स: इसके नियंत्रण हेतु नीम तेल आधारित कीटनाशियों का छिड़काव कर या इमीडाक्लोप्रिड कीटनाशी 17.8 एस.एल. दवा की मात्रा 125 मिली./हे. 500-600 लीटर पानी म मिलाकर छिड़काव कर।

2. माइट :इस कीट के प्रकोप के कारण पत्तियों पर धब्बों का निमाण हो जाता ह और पौधे बौने रह जाते ह। इसके नियंत्रण हेतु 0.05: डाइमेथोएट दवा का छिड़काव कर।

3. बगनी धब्बा(परपल ब्लॉच): इसके लक्षण दिखाई देने पर मेनकोजेब (2.5 ग्रा./ली. पानी) का 10 दिन के अन्तराल से छिड़काव कर। इन फफूंदनाशी दवाओं म चिपकने वाले पदाथ जैसे सैन्ड्रो विट, ट्राइटोन या साधारण गोंद अवश्य मिला द जिससे घोल पत्तियों पर प्रभावी नियंत्रण हेतु चिपक सके।

खुदाई: जब 50 प्रतिशत पौधो की पत्तियॉ पीली पड़कर मुरझाने लगे तब कंदों की खुदाई शुरू कर देना चाहिये। इसके पहले या बाद म कंदों की खुदाई करने से कंदों की भण्डारण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उपज: रबी फसलों से औसतन 250-300 क्विंटल/हैक्टेयर तक उपज प्राप्त होती है।

भण्डारण: प्याज को भण्डारित करते समय निम्न सावधानियां रखना चाहिए।

1. भण्डारण से पहले कंदों को अच्छी तरह सुखा ल तथा (4-6 सेमी आकार) चमकदार व ठोस कंदों का ही भण्डारण कर।

2. भण्डारण नमी रहित हवादार गृहों म कर तथा भण्डारण म प्याज के परत की मोटाई 15 सेमी. से अधिक न हो।

3.भण्डारण के समय सड़े गले कंद समय-समय पर निकालते रहना चाहिए।